मक्का की खेती

- खरीफ एवं जायद दोनों के लिए उपयुक्त
- समय एवं क्षेत्र की अनुकूलता के अनुसार प्रजातियों का चयन
- उन्नतशील प्रजातियों का प्रयोग

प्रजातियां

संकुल प्रजातियां

क्र. सं	प्रजातियां	पकने की अवधि	उपज (कु./ हे.)
1.	प्रभात	100-110	40-45
2.	नवीन	85-90	35-40
3.	नवज्योति	85-90	35-40
4.	गौरव	80-85	30-35

क्र. सं	प्रजातियां	पकने की अवधि	उपज (कु./ हे.)
5.	प्रगति	80-85	30-35
6.	आजाद उत्तम	80-85	30-35
7.	सूर्या	75-80	25-30
8.	कंचन	75-80	25-30
9.	विवेक-27	75-80	25-30

संकर प्रजातियां

क्र. सं	प्रजातियां	पकने की अवधि	उपज (कु./ हे.)
1.	सरताज	100-110	45-50
2.	गंगा-11	100-105	45-50
3.	दकन-107	90-95	40-45

क्र. सं	प्रजातियां	पकने की अवधि	उपज (कु./ हे.)
4.	मालवीय संकर मक्का-290-95	90-95	40-45
5.	प्रकाश	80-85	35-40
6.	पूसा संकर मक्का-5	80-85	35-45

खेत की तैयारी

- दोमट या बलुई दोमट भूमि अच्छी
- पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से तथा दो-तीन जुताइयां देशी हल या कल्टीवेटर या रोटावेटर से
- खेत को भुरभुरा तथा समतल

बीज की मात्रा एवं बुवाई

बुवाई का समय

- खरीफ
  - बुवाई जून के अंत तक
- जायद
  - बुवाई फरवरी के अंत तक

बीज दर

- देशी प्रजातियां (छोटे दाने)
  - 16-18 किलोग्राम / हेक्टेयर
- संकर प्रजातियां
  - 20 से 22 किलोग्राम / हेक्टेयर
- संकुल प्रजातियां
  - 18 से 20 किलोग्राम / हेक्टेयर

- बुवाई हल के पीछे कूंडो में
- बीज बोने की गहराई 3-4 सेंटीमीटर
- लाइन से लाइन की दूरी 60 सेंटीमीटर
- पौधे से पौधे की दूरी 30 सेंटीमीटर

- बीज शोधन
- 2 ग्राम थीरम या 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम से प्रति किलोग्राम बीज

खाद एवं उर्वरक

- 200 से 250 कुंतल सड़ी गोबर की खाद
- मृदा परीक्षण के आधार पर उर्वरको का प्रयोग करें

उर्वरक

- नत्रजन - 120 किलोग्राम
- फास्फोरस - 60 किलोग्राम
- पोटाश - 60 किलोग्राम

- नत्रजन की एक तिहाई मात्रा, फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा कूड़ों में
- नत्रजन की शेष मात्रा को दो बराबर-बराबर भागो में बाँट कर खड़ी फसल में
- पहली टॉप ड्रेसिंग बुवाई के 25 से 30 दिन बाद तथा दूसरी नर फूल निकलते समय

सिचाई

- प्रारंम्भिक अवस्था तथा दाना बनने की अवस्था में पर्याप्त नमी आवश्यक
- फसल में पानी के निकास का अच्छा प्रबंध
- पानी लगने पर पौधे पीले पड़ जाते है और पौधों की बढ़वार रुक जाती है।

खरपतवार नियंत्रण

- निराई-गुड़ाई द्वारा खरपतवार नियंत्रण के साथ ही मृदा में ऑक्सीजन का संचार
- पहली निराई-गुड़ाई जमाव के 15 दिन बाद
- दूसरी निराई-गुड़ाई 35-40 दिन के बाद

रासायनिक नियंत्रण:

एट्राजीन 50% डब्लू पी 1-2.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर

रोग नियंत्रण

- तुलासिता रोग
- पत्तियों का झुलसा रोग
- सूत्रकृमि
- तना सड़न रोग

तुलासिता रोग :

- पत्तियों पर पीली धारियां
- पत्तियों के नीचे की सतह पर सफ़ेद रुई के सामान फफूंदी
- धब्बे बाद में गहरे अथवा लाल भूरे
- रोगी पौधों में भुट्टे कम बनते है

रोकथाम :

- जिंक मैगनीज कार्बमेट या जीरम 80% 2 किलोग्राम अथवा जीरम 27% 3 लीटर प्रति हेक्टेयर

पत्तियों का झुलसा रोग :

- पत्तियों पर लम्बे अथवा कुछ अंडाकार भूरे रंग के धब्बे
- रोग के उग्र होने पर पत्तियां झुलस कर सूख जाती है

रोकथाम :

- जिनेब या जिंक मैगनीज कार्बमेट 2 किलोग्राम अथवा जीरम 80% 2 लीटर अथवा जीरम 27% 3 लीटर प्रति हेक्टेयर

सूत्रकृमि:

- 10 किलोग्राम फोरेट 10G को खेत में अच्छी तरह से मिला देना चाहिए।

तना सड़न:

- तने की पोरियों पर जलीय धब्बे दिखाई देते है, जो शीघ्र ही सड़ने लगते है और उससे दुर्गन्ध आती है।
- पत्तियां पीली पड़ कर सूख जाती है

रोकथाम :

- 15 ग्राम स्ट्रेप्टोसाईक्लीन अथवा 60 ग्राम एग्रीमाइसीन तथा 500 ग्राम कॉपर आक्सीक्लोराइड को प्रति हेक्टेयर

कीट नियंत्रण

- तना छेदक
- पत्ती लपेटक
- टिड्डा
- कमला कीट

तना छेदक:

- सुंडियां तनो में छेद करके, अंदर से तनो को खाती है जिससे मृतगोभ बनता है

रोकथाम :

- कार्बोफ्यूरॉन 3% ग्रेनुल, 20 किलोग्राम प्रति हेक्टर

पत्ती लपेटक कीट :

- सुंडियां पत्ती के दोनों किनारो को रेशम जैसे सूत से लपेटकर अंदर से खाती है।

रोकथाम :

- बीज शोधन करके बुवाई करनी चाहिए
- क्यूनालफास 25EC 2 लीटर / हेक्टर

टिड्डा :

- शिशु तथा प्रौढ़ दोनों ही पत्तियों को खाकर हानि पहुंचाते है।

रोकथाम :

- मिथाइल पैराथियान 2%, 20-25 किलोग्राम प्रति हेक्टर

कमला कीट:

- गिडारे पत्तियों को बहुत तेजी से खाती है

रोकथाम :

- मिथाइल पैराथियान 2%, 20-25 किलोग्राम प्रति हेक्टर

कटाई एवं उपज

उपज :

संकुल प्रजातियां

- 35 - 40 कुंतल प्रति हेक्टेयर

संकर प्रजातियां

- 40 - 45 कुंतल प्रति हेक्टेयर